भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
लोकसभा
तारांकित प्रश्न संख्या- 356
दिनांक 25 मार्च, 2025 के लिए प्रश्न

पशु तथा मत्स्य रोग

***356. श्री राजाभाऊ पराग प्रकाश वाजेः**

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या मंत्रालय ने विगत पांच वर्षों के दौरान सर्वेक्षणों के माध्यम से नासिक जिले में प्रमुख पशु तथा मत्स्य रोगों की पहचान की है और यदि हां, तो रोग व्याप्त होने के संबंध में मुख्य निष्कर्ष क्या रहे हैं, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार ने पशुधन के लिए खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी) नियंत्रण कार्यक्रम जैसे टीकाकरण और रोग निवारण कार्यक्रम तथा मत्स्यपालन के लिए कोई लक्षित रोग प्रबंधन कार्यक्रम लागू किया है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है तथा ऐसे पशुओं और मत्स्य का ब्यौरा क्या है जिनका उपचार किया गया है;

(ग) क्या नासिक में रोग नियंत्रण के लिए विशिष्ट धनराशि आवंटित की गई थी, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा तथा उस धनराशि के उपयोग की स्थिति क्या है;

(घ) नासिक के ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में रोग का शीघ्र पता लगाने तथा उसके उपचार के लिए पशु चिकित्सा और मात्स्यिकी स्वास्थ्य सेवा संबंधी बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं; और

(ङ) क्या सरकार की इस क्षेत्र में रोग की वास्तविक एवं सटीक निगरानी और नियंत्रण के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियां आरंभ करने की कोई योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री
(श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह)

(क) से (ङ): विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

श्री राजाभाऊ पराग प्रकाश वाजे द्वारा पशु तथा मत्स्य रोग के संबंध में दिनांक 25.03.2025 को उत्तर देने के लिए पूछे गए लोक सभा के तारांकित प्रश्न संख्या 356 के भाग (क) से (ड़) के उत्तर में संदर्भित विवरण:

(क) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर)-राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान (एनआईवीईडीआई) ने राष्ट्रीय स्तर पर पशुधन के 15 आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण रोगों की पहचान की है। महाराष्ट्र राज्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार, पिछले पांच वर्षों के दौरान नासिक जिले में खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी), पेस्टे डेस पेटिट्स रूमिनेंट्स (पीपीआर), लम्पी त्वचा रोग (एलएसडी), हेमोरेजिक सेप्टिसीमिया (एचएस), ब्लैक क्वार्टर (बीक्यू), एंट्रोटोक्सीमिया (ईटी) एनाप्लास्मोसिस, एवियन इन्फ्लूएंजा महाराष्ट्र की जानकारी के अनुसार, नासिक जिले से संबंधित प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:-

(i) एआई, एनाप्लास्मोसिस और पीपीआर का अंतिम प्रकोप वर्ष 2020-21 के दौरान हुआ था। उसके बाद, कोई प्रकोप रिपोर्ट नहीं किया गया।

(ii) अंतिम एचएस और एफएमडी प्रकोप वर्ष 2021-22 के दौरान हुआ था। उसके बाद, कोई प्रकोप रिपोर्ट नहीं किया गया।

(iii) एलएसडी का प्रकोप वर्ष 2023-24 में 192 से घटकर वर्ष 2024-25 में 7 हो गया है।

इसके अलावा, जहां तक मत्स्य रोग का संबंध है, हाल के वर्षों में नासिक जिले से मत्स्य रोगों के संबंध में किसी रोग का कोई प्रकोप दर्ज़ नहीं किया गया है।

(ख) पशुधन रोगों का उपचार राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है। हालांकि, नियंत्रण कार्यक्रम, निगरानी, क्षमता निर्माण आदि के लिए केंद्रीय स्तर पर प्रदान की जा रही सहायता का विवरण इस प्रकार है:-

i. पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एलएचडीसीपी) योजना के तहत, खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी), ब्रुसेलोसिस, पेस्टे डेस पेटिट्स रूमिनेंट्स (पीपीआर) और क्लासिकल स्वाइन ज्वर (सीएसएफ) के टीकाकरण के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 100% केंद्रीय सहायता प्रदान की जाती है। केंद्रीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण टीकों की खरीद और आपूर्ति की जाती है। राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों को टीकाकरण सहायक उपकरणों की खरीद, कोल्ड चेन अवसंरचना को सुदृढ़ करने, टीका लगाने वालों के लिए पारिश्रमिक, जागरूकता पैदा करने आदि के लिए सहायता प्रदान की जाती है।

ii. एलएचडीसीपी योजना के उप-घटक पशु रोग नियंत्रण के लिए राज्यों को सहायता (एएससीएडी) के अंतर्गत, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को राज्य प्राथमिकता वाले विदेशी, आकस्मिक और जूनोटिक पशु रोगों के टीकाकरण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें लम्पी त्वचा रोग, ब्लैक क्वार्टर, हैमरेजिक सेप्टिसीमिया आदि शामिल हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नैदानिक अवसंरचना को सुदृढ़ करने और पशु चिकित्सकों तथा पैरा-पशु चिकित्सकों के क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण के लिए भी सहायता प्रदान की जाती है।

iii. संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में अतिसंवेदनशील पशुओं को कुल 110.49 करोड़ एफएमडी वैक्सीन, 4.57 करोड़ ब्रुसेलोसिस वैक्सीन, 25.36 करोड़ पीपीआर वैक्सीन, 0.70 करोड़ सीएसएफ वैक्सीन और 27.31 करोड़ एलएसडी वैक्सीन दी गई हैं। महाराष्ट्र राज्य में, कुल 921.26 लाख एफएमडी वैक्सीन, 28.01 लाख ब्रुसेलोसिस वैक्सीन, 227.24 लाख पीपीआर वैक्सीन, 1.51 लाख सीएसएफ वैक्सीन और 396.00 लाख एलएसडी वैक्सीन दी गई हैं।

iv. मंत्रालय ने जलीय पशु रोगों पर राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम (एनएसपीएएडी) के माध्यम से एक मोबाइल ऐप ("रिपोर्ट फिश डिजीज") तैयार किया है जो किसानों को घटना या प्रकोप की रिपोर्ट करने में सक्षम बनाता है। विशिष्ट रोगजनकों, प्रजातियों और उन स्थानों पर जहाँ जलीय पशु रोग होते हैं, लक्षित रोग निगरानी की जाती है।

(ग) एलएचडीसीपी योजना के तहत राज्य को निधियां आवंटित की जाती हैं और जिले को निधियों का संवितरण राज्य के अधिकार क्षेत्र में होता है। पिछले पांच वर्षों के दौरान एलएचडीसीपी योजना के तहत महाराष्ट्र राज्य

को 18094.67 लाख रुपये जारी किए गए हैं और महाराष्ट्र राज्य से 1026.32 लाख रुपये का उपयोगिता प्रमाणपत्र लंबित है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के तहत, सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में कार्यान्वयन के लिए पीएमएमएसवाई के तहत जलीय पशु रोग संबंधी राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम (एनएसपीएएडी) के दूसरे चरण के कार्यान्वयन के लिए तीन साल की अवधि हेतु 33.78 करोड़ रुपये की निधियां अनुमोदित की गई हैं। एनएसपीएएडी के तहत पिछले पांच वर्षों में महाराष्ट्र राज्य को कुल 150.09 लाख रुपये की निधियां आवंटित की गई हैं।

(घ) महाराष्ट्र राज्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार, नासिक में 266 पशु चिकित्सा संस्थान हैं जिनमें 01 जिला पॉलीक्लिनिक, 06 तालुका मिनी-पॉलीक्लिनिक और 109 ग्रेड-1 और 148 ग्रेड-2 संस्थान और जिले में पशु चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के लिए 2 राज्य मोबाइल इकाइयां शामिल हैं। केंद्रीय सहायता के तहत नासिक में 04 एमवीयू का संचालन किया जा रहा है।

सरकार ने पीएमएमएसवाई के तहत वित्तपोषित जलीय पशु रोग संबंधी राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम (चरण- II) के तहत आईसीएआर-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीएफजीआर), लखनऊ द्वारा विकसित "रिपोर्ट फिश डिजीज" नामक एक एंड्रॉइड-आधारित मोबाइल ऐप लॉन्च किया है। यह ऐप मराठी के अलावा हिंदी, अंग्रेजी और 10 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध है।

(ड़) विवरण इस प्रकार हैं:-

(i) महाराष्ट्र राज्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार, पश्चिमी क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगशाला को जैव सुरक्षा स्तर (बीएसएल)-III में अपग्रेड किया गया है, जिसे संभावित रूप से हानिकारक रोगाणुओं से संबंधित अनुसंधान और निदान कार्य के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसके लिए उच्च नियंत्रण और जैव-सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। रोग निदान के उद्देश्य से आरटी-पीसीआर परीक्षण सुविधा के साथ नासिक क्षेत्र में दो क्षेत्रीय रोग जांच प्रयोगशालाएं (आरडीआईएल) स्थापित की गई हैं।

(ii) मत्स्यपालक विभाग ने आईसीएआर-(एनबीएफजीआर) द्वारा विकसित "रिपोर्ट फिश डिजीज" के रूप में एक मोबाइल ऐप तैयार किया है, जो मछली किसानों, क्षेत्र-स्तरीय अधिकारियों और मछली स्वास्थ्य विशेषज्ञों को निम्नलिखित लाभों के साथ सहजता से जोड़ने और एकीकृत करने के लिए एक केंद्रीय मंच प्रदान करता है:

क. रोग का पता जल्दी लगाना और रिपोर्ट करना: मछली किसान वास्तविक समय में मछली रोगों की रिपोर्ट कर सकते हैं, जिससे प्रारंभिक पहचान और त्वरित प्रतिक्रिया हो सके।
ख. त्वरित प्रतिक्रिया और नियंत्रण उपायः प्राधिकरणों को तत्काल अलर्ट प्राप्त होते हैं, जिसमें वे प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए समय पर हस्तक्षेप कर सकते हैं।
ग. संवर्धित जलकृषि जैव सुरक्षाः यह रोग के फैलाव को रोकने, मछली की मृत्यु दर और आर्थिक हानियों को कम करने में सहायता करती है।
घ. नीति तैयार करने के लिए वैज्ञानिक डेटाः संग्रहित डेटा बेहतर रोग नियंत्रण कार्य नीतियों के लिए अनुसंधान और नीति निर्माण में सहायता करता है।

इसके अलावा, दो सहयोगी केंद्रों, अर्थात् आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबई और मत्स्य महाविद्यालय, रत्नागिरी को महाराष्ट्र के सभी जिलों से रोग प्रकोप की जांच करने और प्रबंधन उपायों का सुझाव देने के लिए नामित किया गया है।

****